करमन की गति न्यारी

डॉ. मदन सिंह

करमन की गति न्यारी

डॉ. मदन सिंह

(Estd : 1939)
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001:2000 प्रकाशक

प्रकाशक • **प्रभात प्रकाशन**™
4/19 आसफ अली रोड
नई दिल्ली-110002
तत्त्वावधान • भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2008
मूल्य • बीस रुपए
मुद्रक • नरुला प्रिंटर्स, दिल्ली

KARMAN KI GATI NYARI *by* Dr. Madan Singh Rs. 20.00
Published by Prabhat Prakashan, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2 (INDIA)
ISBN 978-81-7315-615-1

करमन की गति न्यारी

एक ऊँची पहाड़ी थी। उस पहाड़ी के नीचे एक आश्रम था। आश्रम में एक कुटी थी। उस कुटी में एक बाबा रहते थे।

पुजारी बाबा रोज तड़के पहाड़ी की चोटी पर जाते थे। लोगों का कहना था—पहाड़ी पर बाबा को ईश्वर के साक्षात् दर्शन होते हैं। ईश्वर के दर्शन करने के बाद बाबा अपने आश्रम लौटते थे। वहाँ दुखियारों की भीड़ जमा रहती थी। बाबा सबका दुःख सुनते, उन्हें आशीष देते, लोगों का भला होता।

आश्रम के पास ही एक बस्ती थी। उस बस्ती में करमवती रहती थी। वह मेहनती थी। उसकी शादी दस साल पहले हुई थी। इस बस्ती में उसका नाम हो गया। वह खेतों में काम करती। खेतों की पैदावार बढ़ती चली गई। घर-परिवार उससे खुश रहता। पहले कच्चा घर था। अब पक्का मकान बन गया। दस साल तक उसके कोई संतान नहीं हुई। करमवती को स्वास्थ्य केंद्र में दिखाया गया। वैद्य-हकीम की राय ली गई। अब घर-परिवार ने उसे बाँझ मान लिया। वह सबके मन से उतर गई। वह ताने सहती। घरवाले उसकी पिटाई भी करते। एक दिन तंग आकर करमवती ने घर छोड़ दिया। एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़ती गई। उसने सोचा कि पहाड़ी

की चोटी से कूदकर वह अपना जीवन खत्म कर देगी।

पुजारी बाबा उसी पहाड़ी की चोटी से वापस आ रहे थे। नीचे से एक औरत रोती हुई चोटी की ओर जा रही थी। बाबा ने पूछा—"क्या हुआ बेटी?"

करमवती ने बाबा को बताया—"मेरा विवाह दस साल पहले हुआ था। मेरी कोई औलाद नहीं है। सब लोग मुझे बाँझ कहते हैं। मैं घर से बाहर ही नहीं निकलती। फिर भी अपने करम को क्या कहूँ! मेरे पति ही मुझे अभागिन कहने लगे। मुझे रोज-रोज ताने देते हैं और आए दिन पीटते हैं। वह कहते रहते हैं कि तू कहीं तालाब-नदी में डूबकर मर क्यों नहीं जाती? पहाड़ी की चोटी से कूदकर अपने को खत्म क्यों नहीं कर लेती! आज मैं यही सोचकर आई हूँ। पहाड़ी की चोटी से कूदकर अपना जीवन खत्म कर लूँगी। ऐसे जीने से क्या फायदा?'

बाबा ने कहा—"नहीं बेटी, ऐसे जीवन समाप्त मत करो। अगर ईश्वर ने चाहा तो..." कहते-कहते बाबा रुक गए। करमवती बोली—"बाबा, आप मुझ पर दया कीजिए, मुझे ईश्वर से एक औलाद दिला दीजिए। मेरा जीवन बच जाएगा। मैं इज्जत से जी सकूँगी।"

बाबा ने उसे ढाढस बँधाया और कहा—"मैं ईश्वर से तेरे लिए एक औलाद माँगूँगा। अब तू घर जा।"

करमवती बोली—"मैं घर तभी लौटूँगी, जब औलाद के लिए आशीष मिल जाएगा। नहीं तो इस पहाड़ी की चोटी से कूदकर जान दे दूँगी।" रात को वह आश्रम में रही।

अगले दिन बाबा रोज की तरह चोटी पर गए। उन्होंने ईश्वर की

पूजा की। फिर हाथ जोड़कर उस औरत के लिए एक औलाद माँगी। आकाशवाणी हुई—"इस औरत के करम में औलाद नहीं लिखी है।"

यह सुनकर बाबा निराश हो गए। देखा, करमवती सामने खड़ी है। बाबा बोले "अब कुछ नहीं हो सकता।"

करमवती ने बाबा से कहा, "मैं समझ गई। मर जाने के अलावा अब मेरे पास और कोई रास्ता नहीं है। मैंने आकाशवाणी सुन ली है।"

वह फिर पहाड़ी की चोटी की ओर बढ़ी। चोटी से थोड़ी दूर पहले एक फकीर मिला। वह रास्ते के किनारे झाड़ियों के बीच में रहता था। उसके ऊपर आसमान था और नीचे जमीन थी। रहने के लिए उसके पास झोपड़ी भी न थी। बाबा के आश्रम में भीड़ होती थी। उस फकीर के पास कोई नहीं जाता था। फकीर अकेले ही मस्त रहता था। जाड़ा, गरमी, बरसात, सभी मौसमों में वह खुले आसमान के नीचे ही रहता था।

करमवती रोती हुई इस फकीर के करीब से गुजरी। फकीर ने पूछा, "बेटी, क्यों रो रही हो?'

उसने निराशाभरी नजर से उसकी ओर देखा। फिर आगे चोटी की तरफ जाने लगी। फकीर ने कहा, "बेटी, ठहरो! बताओ तो, क्या बात है?"

निराश करमवती ने अपनी सारी कहानी सुना दी। उसकी बात सुनकर फकीर ने आसमान की तरफ मुँह उठाकर कहा, "इस बेटी को एक औलाद दे दे।"

आकाशवाणी हुई—"इस औरत के भाग्य में एक भी औलाद नहीं है।"

रमेन्द्र

"एक औलाद नहीं है, तो दो दे दे।" फकीर बोला।

"दो दे दे! कैसे"?

"तो फिर तीन दे दे।"

"तीन नहीं, तो फिर चार दे दे।"

फकीर की आवाज ऊँची होती गई। हर बार वह संख्या भी बढ़ाता गया। जब संख्या सात हो गई, तो आकाशवाणी हुई, "ठहर, ठहर, दिया, दिया।"

फकीर ने कहा, "बेटी, घर वापस जा! तेरी सात औलादें होंगी।"

करमवती ने अपने कानों से आकाशवाणी सुनी थी। उसे विश्वास हो गया—मैं माँ बन सकूँगी। वह घर वापस लौटी। समय बीता। वह सात औलादों की माँ भी बनी। परिवार का प्यार मिला।

एक दिन करमवती अपनी सातों औलादों के साथ आश्रम गई।

करमवती बाबा के सामने खड़ी हो गई और बोली, "तू कह रहा था कि मेरे भाग्य में एक भी औलाद नहीं है। देख, ये सातों औलादें मेरी हैं।" बाबा ने अचरज से पूछा, "तेरी! सात औलादें!"

"हाँ, सात औलादें!" करमवती बोली, "तू झूठा है! तेरा ईश्वर झूठा है। सच तो बस... ये मेरी सात औलादें हैं।"

औरत गुस्सा दिखाकर वापस चली गई। बाबा जीवन में पहली बार इतना दुःखी हुए थे। दुःखी होने की बात ही थी। बाबा उसी दुःख के साथ चोटी पर पहुँचे। बाबा ने रोज की तरह पूजा की। फिर साहस करके सवाल किया, "उस औरत ने मुझको झूठा कहा, मैंने सहन कर लिया। उसने आपको भी झूठा कहा, यह मुझे सहन नहीं हो रहा है।"

आकाशवाणी हुई, ''तुम इसका जवाब चाहते हो, तो पहले एक शर्त पूरी करो।' बाबा ने कहा, ''मुझे मंजूर है।''

तभी आकाश से एक तश्तरी आई। उस तश्तरी में चाकू रखा था। आकाशवाणी हुई, ''यह तश्तरी उठाओ। चाकू लो और इस तश्तरी में आदमी के मांस का एक टुकड़ा ले आओ। तुम्हें जवाब मिल जाएगा।''

बाबा ने तश्तरी ले ली। वह आदमी के मांस का एक टुकड़ा माँगने बस्ती की ओर चल दिए। बाबा बस्ती पहुँचे। बाबा ने घर-घर आवाज लगाई। जो व्यक्ति मिला, बाबा ने उससे माँगा। बाबा कहते, ''ईश्वर के नाम पर अपने शरीर का एक टुकड़ा काटकर दे दो।''

वह व्यक्ति कहता, ''बाबा, आगे बढ़ो।''

बाबा हर गली, हर कूचे में गए। हर एक से बाबा मांस के एक टुकड़े की भीख माँगते। हर व्यक्ति बाबा की ओर देखता और कहता, ''बाबा, आगे बढ़ो।''

कई दिन तक बाबा माँगते रहे। सबका जवाब करीब-करीब एक जैसा था, 'बाबा आगे बढ़ो।'

कुछ लोग सोचते—बाबा सठिया गया है! कुछ कहते—बाबा पगला गया है और सचमुच कुछ दिनों बाद सभी लोग बाबा को पागल समझने लगे।

आखिर निराश होकर बाबा उस पहाड़ी की ओर चल पड़े। वह बेहद दुःखी थे। मन-ही-मन सोच रहे थे—पूरा जीवन मैंने ईश्वर की पूजा की। वह उसकी एक प्रार्थना भी पूरी न कर सके। बाबा बड़बड़ा रहे थे—आदमी कितना स्वार्थी है? ईश्वर के नाम पर भी किसी ने अपने

शरीर का एक टुकड़ा काटकर न दिया। धिक्कार है इनके जीवन को!

बाबा जब पहाड़ी पर पहुँचने वाले थे, तब उन्हें वही फकीर मिला। बाबा को मुँह लटकाए देखकर फकीर ने पूछा, "क्या बात है बाबा! रोज तो आप उछलते हुए खुशी-खुशी जाते थे, आज मुँह लटकाए क्यों जा रहे हैं?'

बाबा ने सारी बात बताई। फकीर ने कहा, "बस! इतनी सी बात! बताओ, उसने शरीर के किस हिस्से का मांस माँगा है?"

बाबा ने पूछा, "यह तो मैंने नहीं पूछा।"

फकीर ने पूछा, "अगर मैं अपने पैर का एक टुकड़ा मांस काटकर दे दूँ, तो वह कह सकता है, हाथ का टुकड़ा चाहिए। अगर हाथ का टुकड़ा काटकर दे दूँ, तो वह कह सकता हे कि गरदन का टुकड़ा चाहिए।"

बाबा असमंजस में पड़ गए। सोचने लगे—फकीर बात तो ठीक कह रहा है। इसे क्या जवाब दूँ? यह देख फकीर ने कहा—"आप परेशान न हों। अगर मेरा पूरा शरीर ईश्वर के काम आ जाए, तो इससे अच्छी बात क्या हो सकती है? मैं पैरों से काटना शुरू करता हूँ। आखिर में वही हाथ बाकी रह जाएगा, जिससे अपना शरीर काटूँगा। आप उसे भी उठाकर तश्तरी में रख लेना।"

बाबा प्रसन्न हो गए। उन्होंने सिर हिलाकर हाँ कर दिया।

फकीर ने वैसा ही किया। चाकू लेकर उसने अपने पैर काटे। कमर काटी। पेट काटा। गरदन काटी। आखिर में चाकू वाला हाथ जमीन पर गिर पड़ा। बाबा ने उसे उठाकर तश्तरी में रख लिया। फिर तश्तरी लेकर पहाड़ी की चोटी की ओर चल दिए।

बाबा चोटी पर पहुँचे। बाबा को ईश्वर के दर्शन हुए। बाबा ने कहा, "मैंने आपकी शर्त पूरी की। अब आप मेरे सवाल का जवाब दीजिए।"

उसी समय आवाज आई, "क्या तुम्हें जवाब नहीं मिला?"

बाबा ने कहा, "अभी तो मैंने शर्त पूरी की है। अब जवाब आपको देना है।"

फिर आवाज आई, "मूर्ख, क्या तुझे जवाब नहीं मिल गया?'

बाबा समझ न सके। बाबा ने कहा, 'शर्त तो मैंने अब पूरी की। आपने जवाब कहाँ दिया?"

फिर आकाशवाणी हुई, "मूर्ख, तूने जो अपनी आँखों से देखा, उस पर भी यकीन नहीं आया। जो फकीर मेरे नाम पर अपने को मिटा सकता है, तो क्या मैं उसके माँगने पर अपने लिखे को नहीं मिटा सकता?"

बाबा बहुत लज्जित हुए। उनका अज्ञान दूर हो गया। उन्हें प्रकाश मिल गया। बाबा वहीं पहाड़ी पर रुक गए। लौटकर कुटी में नहीं गए। बस उस पहाड़ी पर और घाटी में एक स्वर गूँजता है—

करमन की गति न्यारी।
करमवती ने बाजी मारी॥

□□□

आमुख

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली ने नवसाक्षरों की आवश्यकताओं, अभिरुचियों और अपेक्षाओं के अनुरूप साक्षरता-साहित्य के निर्माण में नवाचार की पहल की है। हिंदीभाषी क्षेत्रों के नवसाक्षरों की पहचान की रोशनी में प्रौढ़ साक्षरता में लेखनरत साहित्यकारों, समाजार्थिक-चिंतकों, प्रौढ़ शिक्षा विशेषज्ञों तथा सतत शिक्षा केंद्रों के अनुभवी आयोजकों ने 23-24 अगस्त, 2007 की अवधि में भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ में आयोजित विचार गोष्ठी में नवसाक्षरों के लिए उपयोगी साहित्य-लेखन पर गहन विचार-विमर्श किया।

साक्षरता-सामग्री के पाठ्य विवरण पर संगोष्ठी में सम्मिलित विषय विशेषज्ञों में सहमति हुई। साक्षरता सामग्री के तीन प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए। पहला उद्देश्य, जो नवसाक्षरों की साक्षरता को सजीव बनाने और आगे बढ़ाने में सहायक हो; दूसरा उद्देश्य, जो जन-कल्याण और सामूहिक कार्य-संस्कृति को बढ़ावा देनेवाला हो, ताकि सब लोग मिल-जुलकर रहते हुए विकास की ओर बढ़ें। तीसरा उद्देश्य, जो अपने अधिकारों और कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक हित के लिए उन्हें प्रेरणा दे सके, जिससे उनका कल्याण, समाज का हित और राष्ट्र का विकास होता रहे।

इस प्रौढ़ साक्षरता साहित्य कार्यशाला में मेरे द्वारा लिखित पुस्तक **'करमन की गति न्यारी'** नवसाक्षरों को जागरूक पाठक बनाने और विकास के क्षेत्र में उन्हें आगे बढ़ाने के अवसर प्रदान करेगी। इसका संप्रेषण और भाषा स्तर भी प्रौढ़ नवसाक्षरों में जाँच लिया गया है। इस पुस्तक का विधिवत् क्षेत्र-परीक्षण करा लिया गया है। इस पुस्तक में नवसाक्षरों के सामाजिक सरोकारों को प्राथमिकता दी गई है। हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति में अवश्य सफल होगी।

इसे प्रकाशित करने में और इसे नवसाक्षरों तक पहुँचाने में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ने जो सहयोग प्रदान किया है, हम उसके लिए हृदय से आभारी हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि प्रभात प्रकाशन ने इस शृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन एवं वितरण का दायित्व स्वीकार किया है। इस पुस्तक के पाठकों से हमें जो सुझाव प्राप्त होंगे, हम उनका स्वागत करेंगे।

17-बी, इंद्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002

—**डॉ. मदन सिंह**
महासचिव, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001 : 2000 प्रकाशक